एक समय ग्रामीण और नीच लोगों की भाषा थी और मंजते-मंजते यहाँ तक पुष्ट पड़ गई कि संस्कृत को दबा लिया और अनेक भेद उसके हो गए और भेद होने के साथ ही देश में जातीयता को भी टुकड़े-टुकड़े कर डाला।

[This question paper contains 8 printed pages.]

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 3412 **E**

Unique Paper Code : 62054408

Name of the Paper : Anya Gadya Vidhaein (DSC)

Name of the Course : **B.A. (Prog.)**

Semester : IV

Ramanujan College Library Kalkaji, New Delhi-110019

समय : 3 घण्टे पूर्णांक : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. 'साहित्य का उद्देश्य' निबन्ध का प्रतिपाद्य बताइए। (12)

अथवा

'भाषा, संस्कृति और राष्ट्रीयता' निबन्ध का सार लिखिए।

2. 'भक्तिन' का चरित्र-चित्रण कीजिए। (12)

अथवा

अदम्य जीवन में लेखक ने बंगाल के अकाल का सजीव चित्रण किया है। प्रकाश डालिए।

3. वैष्णव जन पाठ का उद्देश्य लिखिए। (12)

अथवा

शायद एकांकी के नामकरण की सार्थकता सिद्ध करते हुए उसकी मूल संवेदना बताइए।

4. 'उखड़े खंभे' पाठ का कथानक संक्षिप्त में लिखिए। (12)

अथवा

'लक्खा बुआ' का उद्देश्य बताइए।

5. निम्नलिखित गद्यांशों में से किन्हीं **दो** की सप्रसंग व्याख्या कीजिए: (7×2=14)

और विषमतावादी संस्कृति के चलते यहाँ 'हम' की भावना का पर्याप्त आभाव देखने को मिलता है। किन्तु इस सबके बावजूद देश के लोगों में भाषात्मक एकता दिखाई देती है और इसका आधार हिन्दी भाषा है। जहाँ हिन्दी में लोक प्रचलित शब्दों और मुहावरों को अंगीकार करने का गुण या शक्ति है और इसके द्वारा उसने स्वयं को समृद्ध और स्वीकार्य बनाया है अर्थात् उसकी संस्कृति जुड़ने और जोड़ने की संस्कृति रही है, वहीं संस्कृत में यह गुण नहीं है, उसकी संस्कृति उजाड़ने की नहीं तोड़ने की रही है।

अथवा

यह भी इसी के प्रगट होता है। प्राचीन भारत जिस समय उन्नति की दशा में था और जातीयता का यहाँ पूर्ण प्रादुर्भाव था उस समय अवश्य संस्कृत देश भर की एक भाषा वैसे ही रही जैसी अब अंग्रेजी यहाँ होती जाती है। पीछे प्राकृत ने जोर पकड़ा जो

पुरुष : ...जो आदमी को रोज-राज एक नया उत्साह दे और... जो है, इसमें कुछ नहीं है।

अथवा

महात्मा जी ने इस तर्क को स्वीकार नहीं किया। कहा, मैं सत्य के अतिरिक्त किसी और राह से स्वराज्य नहीं चाहता। चौरीचौरा और बम्बई में जो कुछ हुआ, उससे स्पष्ट हो गया कि देश अभी सत्याग्रह के लिए तैयार नहीं है। स्वाधीनता कभी किसी के हाथ से दान की तरह नहीं ली जाती है। लेने पर वह टिकती भी नहीं, इस प्रकार, उसे हृदय के रक्त से प्राप्त करना होता है। अहिंसा की कीमत पर मैं भारत के लिए स्वाधीनता लेना स्वीकार नहीं करूँगा बिना अहिंसा के भारत स्वाधीनता नहीं ग्रहण करेगा।

(ख) हालाँकि भारत एक बहुभाषी, बहुधर्मी देश होने के साथ-साथ सामाजिक-सांस्कृतिक विविधताओं और विषमाताओं वाला देश है जो भाषा क्षेत्र, धर्म सम्प्रदाय और जातियों में विभकत है। बहुलता

(क) लक्खा बुआ की शादी हुई लेकिन ससुराल गई ही नहीं। ससुराल के लिए घर से चलीं। लेकिन पहुँची नहीं। कई बार शादी हुई। कई बार घर से दूल्हे के साथ ससुराल के लिए निकलीं। पहुँची एक बार भी नहीं। गाँव से बसहर कदम्ब पेड़ के नीचे डोली उतारते ही बिस्कोहर के लौंडे पहुँच जाते। ससुराल वालों को मार-पीट कर भागा देते। लक्खा को लौटा लाते। लक्खा पुराने दिलगीरों को 'ना' नहीं कर पातीं। मुहल्ला फिर से आबाद, बिस्कोहरी भाषा में जगजिवार हो जाता।

(ख) जीवन के दूसरे परिच्छेद में भी सुख की अपेक्षा दुःख हीं अधिक हैं। जब उसने गेहुँए रंग और बटिया जैसे मुखवाली पहली कन्या के दो संस्करण और कर डाले तब सास और जेठानियों ने ओठ बिचका कर उपेक्षा प्रकट की। उचित भी था, क्योंकि सास तीन-तीन कमाऊ वीरों की विधात्री बनकर मचिया के ऊपर विराजमान पुरखिन के पद पर अभिषिक्त हो चुकी थी और दोनों

जिठानियाँ काकभुशुण्डी जैसे काले लालों की क्रमबद्ध सृष्टि करके इस पद के लिए उम्मीदवार थीं। छोटी बहू के लीक छोड़कर चलने के कारण उसे दण्ड मिलना आवश्यक हो गया।

(ग) गर्व से मेरी छाती फूल उठी। कौन कहता है कि बंगाल मर गया हैं? जहाँ भूख और बीमारियों से लड़कर भी मनुष्यों के बालकों में क्रांति की चिरजीवी रखने का अपराजित साहस है, वह राष्ट्र कभी भी नहीं मर सकेगा। हड्डी-हड्डी से लड़ने वाले या योद्धा जीवन की महान शक्ति को अभी तक अपने में जीवित रख सके हैं, संसार कहता है, स्टालिनग्राड में लोग खँडहरों में से लड़े थे और उन्होंने दुश्मन के दाँत-खट्टे कर दिए। उन्होंने बर्बरता की धारा को रोककर रूस को गुलाम होने से बचा दिया। क्रिन्तु मैं पूछता हूँ, क्या शिद्धिरगंज दूसरा स्टालिनग्राड नहीं? मनुष्य भूख से तड़प-तड़पकर यहाँ जान दे चुके हैं, वे भीषण रोगों का शिकार हो चुके हैं।

(घ) यह उपलब्धि जो चरम मुक्ति और चरम निर्वाण ही हैं, वैष्णवजन को ही प्राप्त हो सकती है। उस वैष्णव जन के दर्शन से 71 पीढ़ियाँ तर जाती हैं क्योंकि वहीं तो शुद्ध हृदय वाला ही ईश्वर और मनुष्य से प्रेम कर सकता हैं उसके लिए इस भावना से बढ़कर मूल्यवान और कुछ नहीं कि हमने किसी दूसरे के दुख में हिस्सा बटाया। अहंकाररहित, भला करने के अभिमान से शून्य, पूर्ण दयालुता ही धर्म का सर्वोच्च रूप है।

6. निम्नलिखि गद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : (7+6=13)

(क) रो रही हो और कहती हो, रो नहीं रही... अरे, तो जिन्दगी कटती ही इस तरह से है! पर हम कहते...हैं....फिर भी... (सोचता हुआ) कोई ऐसी चीज जिन्दगी में होनी जरूर चरूर चाहिए जो...।

स्त्री पल्ले से मुँ ह साफ करके स्वस्थ हो जाती है।

स्त्री : क्या कह रहे थे तुम?